हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL9**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [ ] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): _____

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: [ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anil

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

अधिकांश उत्तर सही हैं
कुछ प्रश्नों हेतु और अध्ययन अपेक्षित है

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 139 टिप्पणी (Remarks): _____

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) नाथ-साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

नाथ साहित्य ~~बौद्ध~~ पर बौद्ध मत का प्रभाव नजर आता है। ये सिद्धों के विपरीत संयम पर बल देते थे। नाथ साहित्य में जातिवाद का खण्डन किया गया है। नाथ साहित्य में ~~प्रारं~~ खड़ी बोली के कुछ लक्षण देखने को मिलते हैं।

नाथ साहित्य के काव्य ~~का~~ एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"जाणि कै अजाणि होय,
बात तू पूछ ले पहाणि,
चेटे को दुआ लाभ होयगा,
गुरु ओड्यो आणि"

उपरोक्त उदाहरण में खड़ी बोली के कुछ लक्षण मिलते हैं। जैसे- 'न' के स्थान 'ण' का प्रयोग, ~~जो~~ पर खड़ी बोली में भी किया जाता है। इसके साथ इकारांत, अकारांत, आकारांत, तथा ओकारांत जैसी विशेषताएँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली में देखने को मिलती है।

नाथों के कुछ साहित्य में तो खड़ी बोली का व्यापारिक ढाँचा तथा शब्द दोनों देखने को मिलते हैं। उदाहरण के लिए चर्पटीनाथ का कथन-

"नौ लाख पातरि आगे नाचै,
पीछे सहज अखाड़ा,
ऐसे मन लौ जोगी खेलै,
तब अंतरि बसै भण्डारा।"

इसमें संख्यावाचक विशेषण जैसे - नौ लाख का उल्लेख है, जो कि खड़ी बोली में भी प्रचलित है। इसके अतिरिक्त इसमें भी अकारांत, आकारांत, ओकारांत जैसी विशेषताएँ मिलती हैं।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था

अपभ्रंश का अर्थ होता है-'भ्रष्ट भाषा'। अपभ्रंश हिंदी भाषा के विकास की प्रक्रिया की एक भाषा है। इसकी कारक व्यवस्था निम्न प्रकार है -

→ अपभ्रंश में निर्विभक्तिक प्रयोग हो गए। जैसे - राम रावण मार

→ ~~जो~~ जिनमें विभक्ति का प्रयोग होता भी था, उनमें अब अकारान्त होने लगा। जैसे -
जगत् → जग
आधुनिक → आधुनिक

→ ~~सभी~~ कारक व्यवस्था के अंतर्गत 'हिं' से ही करण, संबंध, आपादान इत्यादि का कार्य चलता रहा।

→ अपभ्रंश में परसर्गों के स्वतंत्र विकास प्रारंभ हुए। जैसे: कर्ता के लिए 'ने' परसर्ग, संबंध के लिए 'क', 'के' का विकास।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

→ अपभ्रंश के सभी प्रातिपादिक स्वरांत होने लगे।
जैसे - महान् → महाण

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अपभ्रंश की अवस्था में अनेक नवीन सुधार हुए और उनमें कुछ को तो वर्तमान में भी खड़ी बोली में भी स्वीकार किया गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिंदी भाषा और 'केंद्रीय हिन्दी निदेशालय'

स्थापना वर्ष भी बताएँ

केंद्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना अनुच्छेद -351 के अंतर्गत की गई। यह भारत के 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' के अधीन कार्य करता है।

इसने हिंदी के विकास के अनेक कार्य किए। यह भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। इसके द्वारा हिंदी के विकास के लिए निम्न कार्य किए जाते हैं:–

→ हिंदी निदेशालय पत्राचार के माध्यम से हिन्दी के कोर्सों को कराता है।

→ हिंदी निदेशालय हिन्दी शोधार्थियों में गुणवत्ता सुधार हेतु कार्यक्रमों का संचालन करता है।

→ गैर हिन्दी भाषी राज्यों में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी के प्रचार - प्रसार के लिए सम्मेलनों का आयोजन करवाता है।

→ यह अनेक प्रशिक्षण कोर्सों का भी संचालन करता है।

→ यह विदेशों में भी हिंदी के प्रचार - प्रसार के लिए भारतीय छात्रों को भेजने हेतु छात्रवृत्ति प्रदान करता है।

→ यह हिन्दी में पाठ्य पुस्तकों को सरल बनाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है।

→ इसका उद्देश्य भारत में विद्यार्थियों में हिन्दी के प्रति लगाव उत्पन्न करना है।

अतः हम कह सकते हैं कि हिंदी निदेशालय भारत में हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण

केलॉग ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राम की कथा पर डी० लिट की उपाधि प्राप्त की थी। केलॉग ने भारत में हिंदी व्याकरण के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किया। गिलक्राइस्ट तथा एडम्स के पश्चात यदि प्रारंभिक हिंदी व्याकरण के विकास में सर्वाधिक योगदान किसी का है, तो वह केलॉग है।

केलॉग ने हिंदी व्याकरण लेखन में हिंदी को अरबी - फारसी से श्रेष्ठ माना। उन्होंने हिंदी को अरबी - फारसी से पृथक करने का प्रयास किया।

केलॉग ने 'हिन्दी व्याकरण' में हिन्दी के मानकीकरण के अनेक सुझाव दिए। उनका मानना था कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी व्याकरण के लिए बल एवं अवधी के साथ-साथ हिंदी के मानकीकरण का प्रयास करना चाहिए।

अतः हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता पूर्व ~~किए गए~~ हिन्दी व्याकरण के मानकीकरण हेतु किए गए प्रयासों में केलॉग का महत्वपूर्ण योगदान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

भारत के संविधान के अनुसार 1965 में हिंदी को राष्ट्र भाषा का दर्जा प्राप्त होना था। किंतु इससे पूर्व ही गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों, विशेषकर- तमिलनाडु, पश्चिम इत्यादि में हिंदी को लेकर विरोध प्रारंभ हुआ। इन राज्यों का मानना था कि यह * एक प्रकार का भाषाई अतिक्रमण है।

ऐसे में राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित किया गया, जिसमें निम्न प्रावधान थे -

→ 1965 के पश्चात भी अंग्रेजी भाषा की राजभाषा बनी रहेगी और सभी कार्य इसी में किए जाएंगे।

→ राज्य के उच्च न्यायालयों में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ाया जाएगा।

→ हिंदी के व्यापक प्रसार के लिए सरकार निरंतर प्रयास करेगी।

→ जब तक गैर हिंदी भाषी राज्य सहमति प्रदान न करें, तब तक भारत की राष्ट्र भाषा के रूप में स्थापित नहीं किया जाएगा।

इस अधिनियम से हिंदी विरोधी आंदोलन शांत हो गए, किंतु इसमे हिन्दी के राष्ट्र भाषा ~~को~~ के रूप में स्थापित करने के लिए गैर हिंदी भाषी राज्यों से अनुमति का प्रावधान किया गया, जिससे भविष्य में हिन्दी के राष्ट्र भाषा बनने पर प्रश्नचिन्ह लग गया।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) श्री कामताप्रसाद गुरु के हिंदी व्याकरण-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

श्री कामताप्रसाद गुरु का हिंदी व्याकरण लेखन में महत्वपूर्ण योगदान है। 1918 में इन्होंने हिंदी व्याकरण के लिए एक 'हिंदी व्याकरण' नामक मानक ग्रंथ लिखा। गुरु के इस ग्रंथ के प्रकाशन से पहले इस पर विचार करने के लिए नागरी प्रचारिणी सभा के आदेश आचार्य रामचंद्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व में एक समिति का गठन किया गया। इस समिति की समीक्षा के उपरांत 1919 में 'हिन्दी व्याकरण' का प्रकाशन हुआ।

समीक्षा

श्री कामता प्रसाद गुरु ने हिंदी व्याकरण के लिए गहन परिश्रम किया। गुरु के व्याकरण में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निम्न विशेषताएँ देखने को मिलती हैं :-

→ इन्होंने व्याकरण के समाव के में प्रचलित नियमों को ही स्वीकार किया, इन्होंने कोई भी नियम ऊपर से नहीं थोपा।

→ कामता प्रसाद गुरु ने 'हिंदी व्याकरण' की रचना के लिए हिंदी साहित्येतिहास लेखन का प्रयोग किया। इन्होंने राजा शिव प्रसाद सितारेहिंद के हिंदी व्याकरण से अरबी फारसी शब्दों को स्वीकार किया। शैली के लिए इन्होंने 'मराठा व्याकरण' नामक ग्रंथ का उपयोग किया। प्लॉट्स कृत 'हिंदुस्तानी ग्रामर' का उपयोग इन्होंने अंग्रेजी व्याकरण से सिद्धांतों को समझने के लिए किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ इनका चिंतन अत्यंत विषद है।

→ ये कोई नियम साधारण एवं सहज बोली में प्रस्तुत करते हैं। जैसे- लिंग की परिभाषा देते हुए कहते हैं -

'संज्ञा या सर्वनाम के जिन शब्दों से उनकी प्रकृति (स्त्री या पुरुष) स्पष्ट हो, उन्हें लिंग कहते हैं'। हिंदी में लिंग दो प्रकार के हैं - स्त्रीलिंग और पुलिंग।

→ कामताप्रसाद गुरु का लेखन विश्लेषण पर टिका है। जो कि प्रामाणिकता से युक्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामता - प्रसाद गुरु ने हिंदी व्याकरण लेखन के संदर्भ में अपनी लेखनी चला हिंदी भाषा को समर्थ बनाया। उन्होंने हिंदी व्याकरण नियमों के लिए एक प्लेटफॉर्म तैयार किया, जिसका आगे उपयोग किशोरीदास वाजपेयी ने किया।

11½
20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी संज्ञाओं के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संज्ञा किसी व्यक्ति स्थान, या वस्तु का नाम होती है।

हिंदी में संज्ञाओं के पाँच रूप माने गए हैं, जो कि किसी न किसी विशेष समुच्चय को प्रदर्शित करती हैं। संज्ञाएँ निम्न प्रकार की होती हैं –

→ व्यक्तिवाचक संज्ञा ⇒ ऐसी संज्ञा जिनसे किसी व्यक्ति का बोध होता है।
जैसे – →कमला
→ राम
→ मोहन।

→ समूहवाचक संज्ञा ⇒ ~~ऐसी~~ किसी शब्द से किसी समूह का बोध

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हो, न कि किसी स्वतंत्र व्यक्ति का।
जैसे - सेना

→ जातिवाचक संज्ञा ⇒ इससे किसी समूह की जाति का बोध होता है।
जैसे - आम, पशु

→ भाववाचक संज्ञा ⇒ इससे किसी के भावों का बोध हो।
जैसे - अच्छाई, बुराई।

~~→ द्रव्यवाचक संज्ञा ⇒ किसी द्रव्य के नाम को द्रव्यवाचक संज्ञा~~

→ स्थानवाचक संज्ञा ⇒ किसी स्थान का बोध कराने वाले शब्दों को स्थानवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे - कानपुर, झाँसी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अतः हम कह सकते हैं कि हिंदी व्याकरण में संज्ञा व्यवस्था का व्यवस्थित वर्णन किया गया है। संज्ञाओं का मानक रूप विद्यमान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिहारी की विभिन्न बोलियों में 'मैथिली' बोली के साहित्यिक महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी के विभिन्न बोलियों - भोजपुरी, मगही तथा मैथिली में से साहित्यिक दृष्टि से मैथिली सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाषा है।

मैथिली में विद्यापति ने रचनाएँ लिखी, विद्यापति का मैथिली साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है। पदावली विद्यापति की महत्वपूर्ण रचना है, जो मैथिली पर ही आधारित है।

मैथिली में रेखा-चित्र, संस्मरण, यात्रा वृतांत सभी की रचना की गई है। 'सेफालिका वर्मा' की 'यायावर' महत्वपूर्ण रचना है। सेफालिका वर्मा को मैथिली की महादेवी वर्मा भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहा जाता है।
'रतिनाथ की चाची', मैथिली की महत्त्वपूर्ण रचना है।
इसके अतिरिक्त नागार्जुन, रेणु के साहित्य में भी मैथिली स्पष्ट परिलक्षित होती है।
मैथिली का साहित्य अत्यंत समृद्ध अवस्था में है। वर्तमान में भी मैथिली में निरंतर विकास जारी है।

दिखाएँ

6/15

और उदाहरण लाएँ।
मॉडल उत्तर देखें।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए। 20

देवनागरी लिपि वैज्ञानिक भाषा है। फिर भी उसमें कुछ त्रुटियां हैं, अतः उसके मानकीकरण के लिए निम्न प्रयास किए जाने चाहिए -

→ प्रत्येक ध्वनि के लिए एक चिन्ह है।

→ कुछ चिन्हों जैसे - ऌ, ऋ इत्यादि का प्रयोग अब नहीं होता है। अतः इन्हें समाप्त कर देना चाहिए।

→ 'ङ' 'ञ' जैसे चिन्हों का अनुस्वार के रूप में उपयोग होने लगा है। अतः ऐसे चिन्हों का अनुस्वार रूप स्वीकार होना चाहिए। किंतु इन्हें समाप्त नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि कुछ शब्दों जैसे - वाङ्मय इत्यादि को इनके बिना नहीं लिखा जा सकता है।

→ क़, ख़, ग़, ज़, फ़ के नीचे नुक्ते के प्रयोग को मान्यता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मिलनी चाहिए।

→ अर्द्धचंद्र को स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि कुछ शब्दों जैसे - डॉक्टर इत्यादि में इसका प्रयोग होता है।

→ देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि बनाने के लिए इसमें द्रविड़ परिवार की भाषाओं के - य़, ऑ इत्यादि ~~...~~ चिन्हों को स्वीकार किया जाना चाहिए।

→ अनुस्वार का प्रयोग उसी स्थिति में होना चाहिए, जब संयुक्त व्यंजन उसी समूह में हो रहा हो। जैसे - संबंध, कंबल

यदि संयुक्त व्यंजन ~~...~~ उसी वर्ग का नहीं है, तो अनुस्वार का प्रयोग नहीं ~~...~~ होना चाहिए।

→ अनुनासिकता की स्थिति में चंद्रबिन्दु का प्रयोग होना चाहिए। जैसे - चाँद।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ व्यंजन संयोग के लिए स्पष्ट होने चाहिए। जैसे -

* यदि खड़ीपाई वाले किसी व्यंजन का संयोग हो रहा हो, तो पाई को हटा देना चाहिए। जैसे -

प - प्
म - म्

* यदि कोई अंकुड़ा वाली है, तो उसका अंकुड़ा हटा देना चाहिए। जैसे -

क - क्
फ - फ्

* यदि 'र' प्रथम व्यंजन है, तो उसका रेफ के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे- धर्म, कर्म

* यदि 'र' दूसरा व्यंजन है, तो उसके लिए भिन्न नियम जैसे -

→ यदि पहली ध्वनि 'प' है, तो प्र, 'ट' है तो 'ट्र', इत्यादि होना चाहिए।

प्रथम, ट्रक, त्राहि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ शब्दों के द्वित्वीकरण की समस्या का हल किया जाना चाहिए।
जैसे -

झ - झ

श्र - श्र

घ - घ

→ शिरोरेखा का प्रयोग होते रहना चाहिए।
→ लिंग से संबंधित विवाद का समाधान किया जाना चाहिए।
जैसे - राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री इत्यादि को लेकर विवाद।

अतः हम कह सकते हैं कि ~~[illegible]~~ सुधारों को लागू कर देवनागरी लिपि को मानकीकृत किया जा सकता है।

11½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास को आप संतोषजनक मानते हैं? विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्यवसायिक शिक्षा से तात्पर्य है, ऐसी शिक्षा जो व्यवसाय दिलाने में योगदान देती है। इसमें कृषि, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा इत्यादि क्षेत्र को समाहित किया जाता है।

व्यवसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास की स्थिति उन्नत नहीं है। 'शब्दावली आयोग' 'डॉ. रघुवीर' इत्यादि के प्रयासों के बाद भी हिंदी में व्यवसायिक शिक्षा के संदर्भ में तकनीकी शब्दावली का अपेक्षित विकास नहीं है।

फिर भी व्यवसायिक शिक्षा में हिंदी को बढ़ाने के लिए कुछ वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों का विकास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हुआ है। जैसे -

Bee Keeping → मधुमक्खी पालन

Soil Management → भूमि प्रबंधन

Dairy Farming → पशुपालन

Internet → अंतर्जाल

Homeopathy → आयुष विज्ञान

इसके अतिरिक्त अभी भी हिंदी में अनेक व्यवसायिक शिक्षा के लिए आवश्यक शब्दों का विकास नहीं हुआ है। जैसे -

→ प्लंबरिंग

→ कम्प्यूटिंग

→ वैलिंग

→ डेटा मायनिंग

→ प्लम्बर

अतः भारत अब जब कि कौशल विकास के माध्यम से तकनीकी लाभांश

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का प्रयास कर रहा है और व्यवसायिक शिक्षा हेतु हिंदी में शब्दावली का अभाव है। यह चिंता का विषय है। वर्तमान की यह आवश्यकता है कि भारत में प्रत्येक व्यक्ति कौशल युक्त किया जाए, इसके लिए उसे व्यवसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी, ऐसे में हिंदी में शब्दावली होने पर उत्पादकता में वृद्धि होगी। अतः सरकार को इस ओर अधिक सशक्त कदम उठाने चाहिए और जिन शब्दों का निर्माण हो चुका है, उनके प्रयोग को बढ़ाना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दक्खिनी हिन्दी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत में मध्यकाल में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के कारण हिंदी का दक्षिण भारत में प्रसार हुआ। ऐसे में दक्षिण में आदिलशाही वंश की स्थापना होने के पश्चात दक्खिनी हिंदी का व्यापक प्रसार हुआ।

सर्वप्रथम इब्राहिम आदिलशाह (1534-50) ने दक्खिनी के प्रसार के लिए प्रयास किए। आदिलशाह ने शिया धर्म त्यागकर सुन्नी धर्म ग्रहण किया। इससे उसका ईरान से संबंध समाप्त हो गया और फारसी का प्रभाव भी समाप्त हो गया। इसके काल में दक्खिनी हिंदी राजभाषा बन गई, जिसका परिणाम है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कि इसका साहित्य एवं राजकाज में व्यापक प्रसार हुआ।

इब्राहिम आदिलशाह के पश्चात 'अली आदिलशाह शासक' बना। इसने फारसी पर बल दिया किंतु यह सफल नहीं हुआ। इसके काल में दक्खिनी के अनेक कवियों ने आश्रय प्राप्त किया। उनमें 'शाह बुरहानुद्दीन जानम' महत्वपूर्ण है।

इसके पश्चात आदिलशाह द्वितीय शासक बना। इसने भी दक्खिनी हिंदी के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त एक अन्य सुल्तान अली आदिलशाह द्वितीय ने काल में दक्खिनी हिंदी का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। यह शासक स्वयं 'शाही'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

के नाम से दक्खिनी में रचनाएँ करता था।

शाह बुरहानुद्दीन जानम ने दक्खिनी हिंदी में तद्भवीकरण पर बल दिया। उन्होंने गेसूदराज की कठिन भाषा को सरल बना दिया। इसके अलावा आदिलशाह ने स्वयं 'रसरंग' नामक कविता संग्रह लिखा। इसके प्रसिद्ध कवि- गेसूदराज, शाह-बुरहानुद्दीन जानम, अलीमुद्दीन आला है।

नवरस

?

अतः हम कह सकते हैं कि आदिलशाही शासकों के काल में हिंदी का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ।

8½

Gul

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) विद्यापति की राधा

साहित्य ~~भास्त~~ में राधा के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। साहित्य में जयदेव के 'गीत गोविन्द' से प्रारंभ हुई राधा के वर्णन की प्रक्रिया 'कनुप्रिया' तक निरंतर चलायमान है। ऐसे में राधा के विभिन्न रूप सामने आते हैं।

विद्यापति ने राधा के सौंदर्य का अद्वितीय वर्णन किया है। उन्होंने राधा के रूप को 'अपरूप' माना है। राधा में केवल बाह्य सौंदर्य ही नहीं है, बल्कि आंतरिक सौंदर्य भी विद्यमान है। इसीलिए वह कृष्ण को एकनिष्ठ प्रेम करती हैं। उदाहरण के लिए-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"जनम अवधि भर रूप निहारल
नयन न तिरपत भेल"

जयदेव की राधा चुप्पी थी, जबकि विद्यापति की राधा किशोरी है, ऐसे में उनमें ## चांचल्य अधिक है। उदाहरण के लिए राधा अपनी सखी से कृष्ण का वर्णन करती हुई कहती है। जैसे-

"ए सखी देखल एक अपरूप
सुनइत मानबि सपन सरूप।"

अतः हम कह सकते हैं कि विद्यापति ने राधा का अद्वितीय वर्णन किया है, जिसका प्रभाव आगे चलकर सूरदास पर भी देखा जा सकता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मुक्त छन्द

मुक्त छंद छायावाद से संबंधित है। इसका सर्वाधिक प्रयोग छायावाद के प्रसिद्ध कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' द्वारा किया गया।

~~मुक्त~~ मुक्त छंद केवल "छंद से मुक्ति नहीं है, बल्कि छंद रूढ़ि से मुक्ति है।" निराला के काव्य में मुक्त छंदों का व्यापक प्रयोग है। ~~कि~~ मुक्त छंदों में लय तो होती है, किंतु तुक नहीं होती है। किंतु इसमें आंतरिक तुक एवं लय बनी रहती है। 'जूही की कली' निराला की प्रसिद्ध रचना है, जिसमें निराला ने मुक्त छंद का प्रयोग किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पल्लव की भूमिका में निराला लिखते हैं कि "जिस प्रकार सामंती जकड़नों से समाज की मुक्ति आवश्यक है, उसी प्रकार साहित्य में छंद परंपरा से मुक्ति की आवश्यकता है।" निराला का मानना था कि छंद परंपरा के निर्वहन के कारण साहित्य में भावों की अभिव्यक्ति संभव नहीं हो पाती है।

अतः हम कह सकते हैं कि मुक्त छंद ने हिंदी साहित्य ~~को~~ के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैत्रेयी पुष्पा नारी विमर्श की सशक्त उपन्यासकार हैं। नारी विमर्श का मानना है कि 'स्व वेदना' कितनी भी चमीभूत हो, वह संवेदना का स्थान नहीं ले सकती है। ऐसा ही मानना मैत्रेयी जी का था। उन्होंने हिंदी उपन्यासों में महिला शोषण को उजागर किया तथा महिलाओं के अधिकारों की मांग करते हुए, उनकी स्वतंत्रता के लिए अपनी लेखनी चलाई।

मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबूतरी' तथा 'चाक' महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। 'चाक' में वह महिलाओं के ऊपर लादी गई यौन वर्जनाओं का अतिक्रमण करती हैं। इसकी चरित्र 'रेशम' यौन वर्जनाओं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का अतिक्रमण करती है। इसी प्रकार 'अल्मा कबूतरी' में उन्होंने नारी के शोषण एवं उसकी स्वतंत्रता का वर्णन किया है।

अतः हम कह सकते हैं कि उपन्यासों के में नारी विमर्श को स्थापित करने में मैत्रेयी पुष्पा का महत्वपूर्ण योगदान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) घनानंद का काव्य-शिल्प

घनानंद रीतिकालीन कवि हैं। वह दरबारी परंपरा से मुक्त होकर 'आत्मानुभूति' के काव्य की रचना करते हैं।

उनका काव्य-शिल्प अत्यंत सहज एवं सरल है। घनानंद ने ब्रज भाषा में काव्य की रचना की है। उनकी भाषा कथ्य को व्यक्त करने में पूर्णतः समर्थ है। इसीलिए उन्हें 'ब्रज का प्रवीण' भी कहा जाता है। घनानंद अपनी अनुभूतियों से रचना है, ऐसे में यह अनुभूति उनकी भाषा में घुलकर सहज एवं माधुर्य रूप में व्यक्त करती है। उदाहरण के लिए -

"अति सूधो स्नेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

घनानंद ने चमत्कार उत्पन्न करने के लिए अलंकारों का भी प्रयोग किया है। उन्होंने शब्दालंकार एवं अर्थालंकार दोनों का प्रयोग किया है। ~~उपरोक्त~~ उदाहरण के लिए इस दोहा में विरोधाभास का सुंदर प्रयोग है -

"उजरनि बसीं है, हमारी अंखियन देखो।"

घनानंद प्रतीकों के माध्यम से बात कहते हैं। उन्हें सुजान वधू से प्रेम था, किंतु उन्होंने इसकी अभिव्यक्ति राधा के माध्यम से की है। जैसे-

"तेरी रूप रोधे, राधे, राधे, राधे लो लै मिलवैं लौं ब्रजमोहन बहुत जतन है साधे।"

अतः हम कह सकते हैं कि ~~विद्यापति का~~ घनानंद का काव्य शिल्प अत्यंत उच्च कोटि है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) 'अंधा युग' नाटक का महत्त्व

'अंधा युग' नाटक धर्मवीर भारती का महत्वपूर्ण नाटक है।

इसमें उन्होंने समाज में व्याप्त समस्याएँ उठाई हैं तथा वह राज्य की शोषणकारी संस्थाओं, प्रशासन की संवेदनहीनता को ही इसमें उठाते हैं।

अंधा युग नाटक में भारती जी भारत के सामाजिक भेदभाव, भ्रष्टाचार, शोषण एवं सांप्रदायिकता जैसी समस्याओं को उठाते हैं।

अंधा युग रंगमंचीयता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इसमें संवादों की

महत्वपूर्ण और अत्यंत अपूर्ण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चुस्तता विद्यमान है। दृश्य विधान मंचन के अनुकूल है। रंग संकेत पर्याप्त मात्रा में दिए गए हैं। इसे आसानी से सीमित संसाधनों से मंचित किया जा सकता है। इसका वर्तमान में अनेकों ~~बार~~ मंचन हुआ है।

3½/10

संरचना-पक्ष हेतु अध्ययन अपेक्षित!

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

हिंदी में उपन्यास की परंपरा अत्यंत विकसित रही है।

प्रारंभ में हिंदी उपन्यास ऐय्यारी एवं रोमांस पर केंद्रित थे। उनमें आदर्शवाद को महत्व दिया जाता था। वस्तुतः उपन्यास के माध्यम से समाज में को एक आदर्श प्रदान किया जाता था। प्रारंभिक उपन्यास एक उद्देश्य लेकर चलते थे, उसी के अनुसार पूरी रचना का विकास होता है।

प्रारंभिक उपन्यास जैसे- भाग्यवती, परीक्षा गुरु, देवरानी जेठानी की कहानी सभी आदर्शवाद पर केंद्रित रहे। इनका मूल उद्देश्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

समाज में आदर्श स्थापित करना था, जिसके लिए वे हृदय परिवर्तन जैसे साधनों का उपयोग करते थे।

हिंदी उपन्यास धारा में प्रेमचंद के पूर्व ही यथार्थवाद से संबंधित प्रयोग होने प्रारंभ हो गए थे। भुवनेश्वर मिश्र के 'घराऊ घटना' और 'बलवंत भूमिहर' नामक उपन्यास इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। 'घराऊ घटना' जो कि जमींदारों के शोषण पर आधारित है, हिंदी साहित्य का प्रथम यथार्थवादी उपन्यास माना जाता है।

तत्पश्चात प्रेमचंद के युग में प्रेमचंद ने आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को महत्व दिया। उन्होंने प्रेमाश्रय, सेवासदन, रंगभूमि तथा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कर्म भूमि में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को महत्व दिया।

प्रेमचंद का 'गोदान' हिंदी उपन्यास परंपरा में एक छलांग थी। इसके मुख्य चरित्र होरी की मृत्यु के साथ ही प्रेमचंद का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद समाप्त हो गया और वह यथार्थवाद में परिणत हो गया।

प्रेमचंद के पश्चात मनोविश्लेषणवादी धारा, प्रगतिवादी धारा, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श इत्यादि में यथार्थवाद पर बल दिया गया।

अतः हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद को 'गोदान' ने हिंदी उपन्यास परंपरा को यथार्थवाद के धरातल पर लाने में महत्वपूर्ण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भूमिका निभाई

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक राष्ट्रकवि के रूप में रामधारी सिंह 'दिनकर' के समादृत होने के कारणों का उद्घाटन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामधारी सिंह दिनकर ओज के कवि हैं। किसी भी कवि को राष्ट्र कवि तभी माना जाता है, जब वह राष्ट्र की समस्त समस्याओं का वृहद करे और उनका समाधान भी प्रस्तुत करे। वह ऐसी भाषा शैली का उपयोग करे कि उसे राष्ट्र का संपूर्ण जन समझ सके।

रामधारी सिंह दिनकर ओज के कवि हैं। उन्होंने समाज की समस्याओं जैसे बेरोजगारी, गरीबी, स्वतंत्रता से मोहभंग इत्यादि का वर्णन किया है। कुरुक्षेत्र में जहाँ वह युद्ध के प्रसंग को उठाते हैं, तो साथ ही, इसमें उन्होंने विज्ञान, गरीबी इत्यादि के प्रश्न

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उठाए हैं। उदाहरण के लिए -

"जब तक मनुज - मनुज का,
यह सुख - भाग नहीं कम होगा,
समित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।"

दिनकर 'रश्मिरथी'

में भी अनेक समस्याएँ उठाते हैं। दिनकर ने लोकतंत्र में उत्पन्न हो रही समस्याओं को भी उठाया है। दिनकर इन समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। उनका मानना है कि असमानता को समाप्त होना चाहिए। विज्ञान का मानव के हितों के लिए उपयोग किया जाना चाहिए तथा संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण हो। तभी देश में विकास हो सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिनकर की भाषा शैली भी उन्हें राष्ट्रकवि बनाती है। वह ~~उद्भोव~~ उद्बोधन शैली में अपनी रचनाएँ लिखते हैं, जिससे इनका आम जन से अधिक जुड़ाव होता है। उदाहरण के लिए -
"उठो व्योम के मेघ तुम्हें लूटने हम आते हैं,
दूध - दूध, तुम्हारा दूध निकालने आते हैं।"

दिनकर ने स्वतंत्रता आंदोलन ~~के~~ में ओज पैदा करने के लिए रचनाएँ लिखी हैं। जैसे - "कह दे तू आज अपने शंकर से,
करें प्रलय नृत्य फिर एक बार"

अतः हम कह सकते हैं कि दिनकर हिंदी साहित्य के राष्ट्रकवि हैं।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला की प्रगति-चेतना पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निराला छायावादी कवि हैं। ऐसे में यह विवाद उत्पन्न हो जाता है कि क्या उनके काव्य में प्रगति-चेतना विद्यमान है? हिन्दी साहित्य के समीक्षकों में इसको लेकर विवाद की स्थिति है। कुछ समीक्षक उन्हें प्रगति-चेतना से युक्त मानते हैं, तो कुछ नहीं।

निराला के काव्य में प्रगति-चेतना के तत्व देखने को मिलते हैं। उनकी प्रारंभिक रचनाओं जैसे- वह तोड़ती पत्थर, विधवा, खण्डहर इत्यादि में प्रगति चेतना देखने को मिलती है।

सर्वाधिक स्पष्ट

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रूप में इनकी प्रगति चेतना 'कुकुरमुत्ता' में स्पष्ट होती है। कुकुरमुत्ता जो कि साधारण वर्ग का प्रतिनिधि माना जाता है, उसके माध्यम से निराला अपनी प्रगति - चेतना स्पष्ट करते हैं।

'डाल पर क्यों इतराता है, कैपटलिस्ट', के माध्यम से वह पूंजीपतियों पर चोट करते हैं। इसी प्रकार इसमें वह वर्ग - भेद इत्यादि समस्याओं को उठाते हैं।

किंतु निराला की प्रगति चेतना मार्क्सवाद पर आधारित नहीं है, बल्कि वह समाज के उपेक्षित दबे-कुचले, वंचित वर्ग के उत्थान हेतु अपनी लेखनी चलाते हैं। जैसे - सरोज स्मृति के माध्यम से उन्होंने नारी स्वतंत्रता की बात की है।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation